IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 5, September 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

राजस्थानी साहित्य: महिलाओंकी भूमिका

Dr. Kavita Sharma

Assistant Professor, Department of Hindi, Dayanand College, Ajmer, Rajasthan, India

सार

राजस्थानी भाषा के साहित्य की संपूर्ण भारतीय साहित्य म अपनी एक अलग पहचान है। राजस्थानी का चीन साहित्य अपनी विषालता एवं अगाधता मे इस भाषा की गरिमा, प्रोढ़ता एवं जीवन्तता का सूचक है । अनकानेक ग्रन्थों के नष्ट हो जाने के बाद भी हस्तलिखित ग्रन्थों एवं लोक साहित्य का जितना विषाल भण्डार राजस्थानी साहित्य का है, उतना षायद ही अन्य भाषा में हो। विपुल राजस्थानी साहित्य के निर्माणकर्ताओं को षैलीगत एवं विषयगत भित्रताओं के कारण निम्न पांच भागों कें विभक्त कर सकतें है-

(1) जैन साहित्य,
(2) चारण, साहित्य
(3) ब्राह्मण साहित्य
(4) संत साहित्य,
(5) लोक साहित्य।

जैन साहित्य – जैन धर्मावलम्बियों गथा- जैन आचार्यो, मुनियों, यतियों, एवं श्रावको तथा जैन धर्म से प्रभावित साहित्यकारों द्वारा वृहद् मात्रा में रचा गया साहित्य जैन साहित्य कहलाता है । यह साहित्य विभित्र प्राचीन मंदिरों के ग्रन्थागारों विपुल मात्रर मंे संग्रहित है । यह साहित्य धार्मिक साहित्य है जो गद्य एवं पद्य दोनों में उपलब्ध हे ।

चारण साहित्य-राजस्थान के चारण आदि विरूद्ध गायक कवियाॅ द्वारा रचित अन्याय कृतियों को सम्मिलित रूप् से चारण साहित्य कहते है । चारण साहित्य मुख्यतः पद्य में रचा गया हे । इसमे वीर कृतियों का बाहुल्य है ।
ब्राह्मण साहित्य- राजस्थानी साहित्य में ब्राह्मण साहित्य अपेक्षाकृत कम मात्रा में उपलब्ध है कान्हड़दे प्रबन्ध, हम्मीरायण, बीसलदेव रासौ, रणमल छंद आदि प्रमुख गन्ंथ इस श्रेणी के ग्रन्थ है।

संत साहित्य – मध्यकाल में भक्ति आन्दोलन की धारा में राजस्थान की षांत एवं सौम्य जलवायु मे इस भू-भाग पर अनेक निर्गुणी एवं सगुणी संत-महात्माओं का आविर्भाव हुआ। इन उदारमना संतों ने ईष्वर भक्ति में एवं जन-सामान्य कल्याणार्थ विपुल साहित्य की रचाना यहाॅ की लोक भाषा में की है । संत साहित्य अंधिकांषतः प़द्यमय ही है ।

लौक साहित्य – राजस्थानी साहित्य में सामान्यजन द्वारा प्रचलित लोक षैली में रचे गये साहित्य की भी अपार थापी विद्यमान है । यह साहित्य लोक गाथाओं, लोकनाट्यों कहावतों, पहेलियो एवं लोक गीतों के रूप में विद्यमान है ।

राजस्थानिक साहित्य गद्य एवं पद्य दोनांे मे रचा गया है । इसका लेखन मुख्यतः निम्न विधाओं में किया गया हैः

1. ख्यातः- राजस्थानी साहित्य के इतिहासपरक ग्रन्थ, ंिजनको रचना तत्कालीन षासकों ने अपनी मान मर्यादा एवं वंषावली के चित्रत हेतु करवाई ‘ख्यात‘ कहलाते है । मुहणोत नैणसी री ख्यात, दयालदास को बीकानेर रां राठौड़ा री ख्यात आदि प्रसिद्ध है ।
2. वंषावलीः- इस श्रेणी की रचनाओं में राजवंषो की वंषावलियाॅ विस्तृत विवरण सहित लिखी गई हे जैसे राठौड़ा री वंषावली, राजपूनों री वंषावली आदि।
3. वातः- वात का अर्थ कथा या कहानी से है । राजस्थान मे ऐतिहासिक, पौराणिक, प्रेम परक एवं काल्पनिक कथानकांे पर वात साहित्य अपार है।
4. प्रकासः- किसी वंष अथवा व्यक्ति विषेष की उपलब्धियाॅ या घटना विषेष पर प्रकाष डालने वाली कृतियाॅं ‘प्रकास‘ कहलाती है । राजप्रकास, पाबू प्रकास, उदय प्रकास आदि इनके मुख्य उदाहरण है।
5. वचनिकाः- यह एक गद्य-पद्य तुकान्त रचना होती है, जिससे अन्त्यानुप्रास मिलता है राजस्थानी साहित्य में अचलदास खाॅची री वचनिका एवं राठौड़ रतनसिंह जी महेस दासोत से वचनिका प्रमुख है । वचनिका मुख्यतः अपभ्रंष मिश्रित राजसथानी मे लिखी हुई है ।
6. मरस्याः- राजा या किसी व्यक्ति विषेष को मृत्योपरांत षोक व्यक्त करने के लिए रचित काव्य, जिसमें उसके व्यक्ति के चारित्रिक गुणों के अलावा अन्य क्रिया-कलापों का वर्णन किया जाता है ।
7. दवावैत – यह उर्दू-फारसी की षब्दावली से युक्त राजस्थानी कलात्मक लेखन षैली है, किसी की प्रषंसा दोहों के रूप में की जाती है

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

।
8. रासी- राजाओं की प्रषंसों में लिखे गए काव्य् ग्रन्थ जिनमें उनके युद्ध अभियानों व वीरतापुर्ण कत्यों के विवरण के साथ – उनके राजवंष का विवरण भी मिलता है । बीसलदेव रासी, पृथ्वीराज रासौ आदि मुख्य रासौ ग्रन्थ है
9. वेलि- राजस्थानी वेलि साहित्य में यहॉ के षासकों एवं सामन्तों की वीरता, इतिहास, विद्वता,उदरता , प्रेम-भावना, स्वामिभक्ति, वंषावली आदि घटनाओं का उल्लेख होता है । पृथ्वीराज राठोड़ लिखित 'वेलि किसन रूकमणिरी ' प्रसिद्ध वेलि ग्रन्थ है ।
10. विगतः-यह भी इतिहास परक ग्रन्थ लेखन की षैली है । 'मारवाड़ रा परगना री विगत्' इस षैली की प्रमुख रचना है ।

राजस्थान साहित्य की विशेषताएं :-

1. राजस्थानी साहित्य गद्य-पद्य की विषिष्ट लोकपरक षैलियों यथा- ख्यात, वात, वेलि, वचनिका दवावैत आदि रूपों में रचा गया है ।
2. राजस्थानी साहित्य में वीर रस एवं श्रृंगार रस का अद्भूद समन्वय देखने को मिलता है । यहॉ के कवि कमल एवं तलवार के धनी रहे है अतः इन्हांेने इन दानों विरोधाभासी रसों की अद्भूत समन्वय अपने सहित्य लेखन में किया है ।
3. जीवन आदर्षों एवं जीवन मुल्यों का पोषण राजस्थानी साहित्य में मातृभूमि के प्रति दिव्य प्रेम, स्वामीभक्ति स्वाभीमान, स्वधर्मनिष्ठ, षरणागत की रक्षा, नारी के षील की रक्षा आदि जीवन मुल्यों एवं आादर्षो को पर्याप्त महत्व दिया है ।
साहित्य में प्रथम

1. राजस्थान की प्राचिनतम रचना:-भरतेष्वर बाहूबलिघोर (लेखकः वज्रसेन सूरि – 1168 ई. के लगभग) ।
भाषा -मारू गुर्जन
विवरण – भारत और बाहूबलि के बीच हुए युद्ध का वर्णन ।
2. संवतोल्लेख वाली प्रथम राजस्थानी रचनाः-भारत बाहूबलि रास (1184 ई,) में षलिभद्र सूरि द्वारा रचित ग्रंथ भारू गुर्जर भाष में रचित रास परम्परा में सर्वप्रथम और सर्वाधिक पाठ वाला खण्ड काव्य।
3. वचनिका षैली की प्रथम सषक्त रचनाः- अचलदास खींची से वचनिका (षिवदास गाडण)
4. राजस्थानी भाषा का सबसे पहला उपन्यास:-कनक सुन्दर (1903, में भरतिया द्वारा लिखित । श्री नारायण अग्रवाल का 'चाचा' राजस्थानी का दूसरा उपन्यास है ।)
5. राजस्थानी का प्रथम नाटकः-केसर विलास (1900- षिवचन्द्र भरतिया)
6. राजस्थानी में प्रथम कहानीः- विश्रांत प्रवास (1904- षिवचन्द्र भरतिया) (इस प्रकार षिवचन्द्र भरलिया राजस्थानी उपन्यास नाटक और कहानी के प्रथम लेखक माने जाते है ।)
7. स्वातंत्र्योत्तर काल का प्रथम राजस्थानी उपन्यासः- आभैपटकी (1956- श्रीलाल नथमल जोषी)
8. आधुनिक राजस्थानि की प्रथम काव्यकृतिः- बादली (चन्द्रसिंह विरकाली) । यह स्वतंत्र प्रकृति की प्रथम महत्त्वपुर्ण कृति है ।

साहित्य अकादमी नई दिल्ली और मरूदेश संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में सालासर के सावरथिया सेवा सदन में दो दिवसीय राजस्थानी महिला लेखन सम्मेलन में राजस्थानी के महिला लेखन की दशा और दिशा पर पर मंथन के बाद समापन हुआ। इस दौरान एक नई ऊर्जा के साथ लेखन करने की प्रतिबद्धता के साथ महिला रचनाकारों ने हुंकार भरी।

मरूदेश संस्थान के अध्यक्ष डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा ने बताया कि सम्मेलन के चार सत्रों में 16 राजस्थानी रचनाकारों ने विविध विषयों पर रचनापाठ व पत्रवाचन किया। पहले सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ रचनाकार किरण बादल ने की। सत्र में डॉ. गीता सामौर ने लोक साहित्य में नारी चेतना विषय पर अपनी बात रखते हुए कहा कि लोक साहित्य नारी चेतना का ही साहित्य है।

डॉ. रेणुका व्यास'' नीलम'' ने आधुनिक राजस्थानी कविता और नारी विषय पर कहा कि भाव और शिल्प के स्तर पर आधुनिक राजस्थानी महिला कविता किसी भी दूसरी भाषा से जरा भी कम नहीं है। दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. सुमन बिस्सा ने की। मोनिका गौड़ ने कविता पाठ करते हुए अपनी कविता "हारी नीं है स्त्री री हूंस " और अन्य कविताओं का वाचन किया।

इसी प्रकार डॉ. कृष्णा आचार्य आपनी राजस्थानी कहानी '' चोथो चितराम '' का वाचन किया और विनिता शर्मा ने अपनी राजस्थानी काव्य रचनाओं का पाठ किया। राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक मधु आचार्य आशावादी ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर ख्यातिप्राप्त साहित्यकार डॉ. अर्जुनदेव चारण, भंवरसिंह सामौर, डॉ. मंगत बादल ,कमल नयन तोषनीवाल, डॉ. शारदा कृष्ण, सुमनेश शर्मा, किशोर सैन, नरेंद्र शर्मा, शंकर सामरिया, रामचंद्र आर्य, राधाकृष्ण कौशिक, मदनलाल गुर्जर, मोहन चैतन्य शास्त्री, औंकार पारीक आदि उपस्थित रहे।[1]

राजस्थानी महिला लेखन समृद्ध रहा है, अब ध्यान देने की जरूरत

चौथे सत्र में डॉ. धनंजया अमरावत की अध्यक्षता में डॉ. संजू श्रीमाली ने आधुनिक राजस्थानी कविता में प्रयोग संदर्भ महिला लेखन पर बोलते हुए कहा कि राजस्थानी का महिला लेखन समृद्ध रहा है। वर्तमान में भी हमें इस तरफ ध्यान देने की आवश्यकता है। अमिता

सेठिया ने तेरापंथ के राजस्थानी साहित्य में नारी जागरण विषय पर आचार्य तुलसी व अन्य जैन संतों की रचनाओं में नारी संवेदनाओं का चित्रण किया।

अध्यक्षता करते हुए राजस्थान विवि की सह आचार्य डॉ. मीता शर्मा ने कहा कि राजस्थानी साहित्य और विशेष रूप से महिला लेखन कर्म की जांच पड़ताल आधुनिक साहित्यिक सिद्धातों पर होनी चाहिए। मनीषा आर्य सोनी व सीमा भाटी ने कविता पाठ किया। ऋतु शर्मा ने राजस्थानी कहानी पाठ किया

परिचय

राजस्थानी साहित्य की प्रमुख रचनाए

1. ग्रन्थ एवं लेखक पृथ्वीराज रासौ (कवि चन्द्र बरदाई)ः- इसमें अजमेर के अन्तिम चैहान सम्राट- पृथ्वीराज चैहान तृतीय के जीवन चरित्र एवं युद्धों का वर्णन । यह पिंगल में रचित वीर रस का महाकाव्य है । माना जाता है कि चन्द बरदाई पृथ्वीराज चैहान का दरबारी कवि एवं मित्र था ।
2. खुमाण रासौ (दलपत विजय)ः- पिंगल भाषा के इस ग्रन्थ में मेवाड़ के बापा रावल से लेकर महाराजा राजसिंह तक के मेवाड़ षासकों का वर्णन है।
3. विरूद छतहरी, किरतार बावनौ (कवि दुरसा आढ़ा)ः- विरूद् छतहरी महाराणा प्रताप को षौर्य गाथा है और किरतार बावनौ में उस समय की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को बतलाया गया है ं। दुरसा आढ़ा अकबर के दरबारी कवि थे। इनकी पीतल की बनी मूर्ति अचलगढ़ के अचलेश्श्वर मंदिर में विद्यमान है ।
4. बीकानेर रां राठौड़ा री ख्यात (दयालदास सिंढायच):- दो खंडोे के ग्रन्थ में जोधपुर एवं बीकानेर के राठौड़ों के प्रारंम्भ से लेकर बीकानेर के महाराजा सरदार सिंह सिंह के राज्यभिषक तक की घटनाओं का वर्णन है ।
5. सगत रासौ (गिरधर आसिया) मनु प्रकाषन:-इस डिंगल ग्रन्थ में महाराणा प्रताप के छोटे भाई षक्तिसिंह का वर्णन हे । यह 943 छंदों का प्रबंध काव्य है । कुछ पुस्तकों में इसका नाम सगतसिंह रासौ भी मिलता है ं।
6. हम्मीर रासौ (जोधराज):- इस काव्य ग्रन्थ में रणथम्भौर षासक राणा चैहान की वंषावली व अलाउद्दीन खिलजी से युद्ध एवं उनकी वीरता आदि का विस्तृत वर्णन है।
7. पृथ्वीराज विजय (जयानक) :- संस्कृत भाषा के इस काव्य ग्रन्थ में पृथ्वीराज चैहान के वंषक्रम एवं उनकी उपलब्धियांॅ का वर्णन किया गया है। इसमें अजमेर के विकास एवं परिवेष की प्रामाणिक जानकारी है ।
8. अजीतोदय (जगजीवन भट्ट):-मुगल संबंधों का विस्तृत वर्णन है । यह संस्कृत भाषा में है ।
9. ढोला मारू रा दूहा (कवि कल्लोल)ः- ड़िभाषा के श्रृंगार रस से परिपुर्ण इस ग्रन्थ में ढोला एवं मारवणी के प्रेमाख्यान का वर्णन है ।
10. गजगुणरूपक (कविया करणीदान):- इसमें जोधपुर के महाराजा गजराज सिंह के राज्य वैभव तीर्थयात्रा एवं युद्धों का वर्णन है गाडण जोधपुर महाराजा गजराज सिंह के प्रिय कवि थे ।
11. सूरज प्रकास (कविया करणीदान):-इसमें जोधपुर के राठौड़ वंष के प्रारंभ से लेकर महाराजा अभयसिंह के समय तक की घटनाओं का वर्णन है । साथ ही अभयसिंह एवं गुजरात के सूबेदार सरबुलंद खांॅ के मध्य युद्ध एवं अभयसिंह की विजय का वर्णन हे ।
12. एकलिंग महात्म्य (कान्हा व्यास):-यह गुहिल षासकों की वंषावाली एवं मेवाड़ के राजनैतिक व सामाजिक संगठन की जानकारी प्रदान करता है ।
13. मूता नैणसी री ख्यात मारवाड़ रा परगना री विगत (मुहणौत नैणसी):- जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह – प्रथम के दीवान नैणसी की इस कृति में राजस्थान के विभिन्न राज्यों के इतिहास के साथ-साथ समीपवर्ती रियासतों (गुजरात, काठियावाड़ बघेलखंड आदि) के इतिहास पर भी अच्छा प्रकाष डाला गया है। नैणसी को राजपूताने का 'अबुल फ़जल' भी कहा गया है। मारवाड़ रा परगना री विगत को राजस्थान का गजेटियर कह सकते है
14. पद्मावत (मलिक मोहम्मद जाबसी)ः- 1543 ई, लगभग रचित इस महाकाव्य में अलाउद्दीन खिलजी एवं मेवाड़ के षासक रावल रतनसिंह की रानी पद्मिनी को प्राप्त करने की इच्छा थी।
15. विजयपाल रासौ (नल्ल सिंह)ः-पिंगल भाषा के इस वीर-रसात्मक ग्रन्थ में विजयगढ़(करौली) के यदुवंषी राजा विजयपाल की दिग्विजय एवं पंग लड़ाई का वर्णन है । नल्लसिंह सिरोहिया षाखा का भाट था और वह विजयगढ़ के ययुवंषी नरेष विजयपाल का आश्रित कवि था।
16. नागर समुच्चय (भक्त नागरीदास):-यह ग्रन्थ किषनगढ़ के राजा सावंतसिंह (नागरीदास) की विभित्र रचनाओं का संग्रह है सावंतसिंह ने राधाकृष्ण की प्रेमलीला विषयक श्रृंगार रसात्मक रचनाएॅ की थी।[2]
17. हम्मीर महाकाव्य (नयनचन्द्र सूरि)ः-संस्कृत भाषा के इस ग्रन्थ में जैन मुनि नयनचन्द्र सूरि ने रणथम्भौर के चैहान षासकों का वर्णन किया है ।
18. वेलि किसन रूक्मणि री (पृथ्वीराज राठौड़):- सम्राट अकबर के नवरत्नों में से कवि पृथ्वीराज बीकानेर षासक रायसिंह के छोटे भाई तथा 'पीथल' नाम से साहित्य रचना करते थे। इन्होंने इस ग्रन्थ में श्री कृष्ण एवं रूक्मणि के विवाह की कथा का वर्णन किया है । दुरसा आढ़ा ने इस ग्रन्थ को पांॅचवा वेद व 19वांॅ पुराण कहा है। बादषाह अकबर ने इन्हें गागरोन गढ़ जागीर में दिया था।

19. कान्हड़दे प्रबन्ध (पद्मनाभ)ः- पद्मनाभ जालौर षासक अखैराज के दरबारी कवि थे । इस ग्रन्थ में इन्होंने जालौर के वीर षासक कान्हड़दे एवं अलाउद्दीन खिलजी के मध्य हुए युद्ध एवं कान्हड़दे के पुत्र वीरमदे अलाउद्दीन की पुत्री फिरोजा के प्रेम प्रसंग का वर्णन किया हे ।
20. राजरूपक (वीरभाण) मनु प्रकाषनः- इस डिंगल ग्रन्थ में जोधपुर महाराजा अभयसिंह एवं गुजरात के सूबेदार सरबुलंद खाॅ के मध्य युद्ध (1787 ई,) का वर्णन है।
21. बिहारी सतसई (महाकवि बिहारी):-मध्यप्रदेष में जन्में कविवर बिहारी जयपुर नरेष मिर्जा राजा जयसिंह के दरबारी कवि थे। ब्रजभाषा में रचित इनका यह प्रसिद्ध ग्रन्थ श्रृंगार रस की उत्कृष्ट रचना है ।
22. बाॅकीदास री ख्यात (बाॅकीदास) (1838-90 ई,):-जोधपुर के राजा मानसिंह के काव्य गुरू बाॅकीदास द्वारा रचित यह ख्यात राजस्थान का इतिहास जानने का स्त्रोत है । इनके ग्रन्थों का संग्रह 'बाॅकीदास ग्रन्थवली' के नाम से प्रकाषित है । इनकें अन्य ग्रन्थ मानजसोमण्डल व दातार बावनी भी है।
23. कुवलमयाला (उद्योतन सूरी)ः- इस प्राकृत ग्रन्थ की रचना उद्योतन सूरी ने जालौर में रहकर 778 ई, के आसपास की थी जो तत्कालीन राजस्थान के सांस्कृतिक जीवन की अच्छी झाकी प्रस्तुत करता है ।
24. ब्रजनिधि ग्रन्थावली:- यह जयपुर के महाराजा प्रतापसिंह द्वारा रचित काव्य ग्रन्थों का संकलन है ।
25. हम्मीद हठ,सुर्जन:-बूंदी षासन राव सुर्जन के आश्रित कवि चन्द्रषेखर द्वारा रचित।
26. प्राचीन लिपिमाला,राजपुताने का इनिहास (पं.गौरीषंकर औझा):- पं. गौरीषंकर हीराचन्द्र ओझा भारतीय इतिहास साहित्य के पुरीधा थे, जिन्होंने हिन्दी में सर्वप्रथम भारतीय लिपी का षास्त्र लेखन कर अपना नाम गिनीज बुक मे लिखवाया। इन्होंने राजस्थान के देषी राज्यों का इतिहास भी लिखा है । इनका जन्म सिरोही रियासत में 1863 ई. में हुआ था।[3]
27. वचनिया राठौड़ रतन सिंह महे सदासोत री(जग्गा खिड़िया):-इस डिंगल ग्रंथ में जोधपुर महाराजा जसवंतंिसंह के नेतृत्व में मुगल सेना एवं मूगल सम्राट षाहजहाॅ के विद्रोही पुत्र औरंगजेब व मुराद की संयुक्त सेना के बीच धरमत (उज्जैन, मध्यप्रदेष) के युद्ध मंे राठौड़ रतनसिंह के वीरतापूर्ण युद्ध एवं बलिदान का वर्णन हे ।
28. बीसलदेव रासौ (नरपति नाल्ह) :- इसमें अजमेर के चैहान षासन बीसलदेव (विग्रहरा चतुर्थ) एवं उनकी रानी राजमती की प्रेमगाथा का वर्णन है ।
29. रणमल छंद (श्रीधर व्यास):-इनमें से पाटन के सूबेदार जफर खाॅ एवं इडर के राठौड़ राजा रणमल के युद्ध (संवर्त 1454) का वर्णन है। दुर्गा सप्तषती इनकी अन्य रचना है।श्रीधर व्यास राजा रणमल का समकालीन था।
30. अचलदास खींची री वचनीका (षिवदास गाडण):- सन् 1430-35 के मध्य रचित इस डिंगल ग्रन्थ में मांडू के सुल्तान हौषंगषाह एवं गागरौन के षासक अचलदास खींची के मध्य हुए युद्ध (1423 ई.) का वर्णन है एवं खींची षासकों की संक्षिप्त जानकारी दी गई है।
31. राव जैतसी रो छंद(बीठू सूजाजी)ः- डिंगल भाषा के इस ग्रन्थ में बाधर के पुत्र कामरान एवं बीकानेर नरेष राव जैतसी के मध्य हुए युद्ध का वर्णन है ।
32. रूक्मणी हरण, नागदमण(सायांजी झूला) :- ईडन नेरष राव कल्याणमल के आश्रित कवि सायंाजी द्वारा इन ंिडंगल ग्रन्थों की रचना की गई।
33. वंष भास्कर(सूर्यमल्ल मिश्रण)(1815-1868 ई.) -वष भास्कर को पूर्ण करने का कार्य इनके दत्तक पुत्र मुरारीदान ने किया था। इनके अन्य ग्रन्थ है -बलवंत विलास, वीर सतसई व छंद-मयूख उम्मेदसिंह चरित्र, बुद्धसिंह चरित्र।
34. वीर विनोद (कविराज ष्यामलदास दधिवाड़िया) -मेवाड (वर्तमाान भीलवाड़ा) में 1836 ई. में जन्में एवं महाराण सज्जन के आश्रित कविराज ष्यामलदास ने अपने पर प्रारंभ की । चार खंडों में रचित इास ग्रन्थ पर कविराज की ब्रिटिष सरकार द्वारा 'केसर-ए-हिन्द' की उपाधि प्रदान की गई । इस ग्रन्थ में मेंवाड़ के विस्तृत इतिहास वृृत्त सहित अन्य संबंधित रियासतों का भी इतिहास वर्णन हं । मेवाड़ महाराणा सज्जनसिंह ने ष्यामलदास को 'कविराज' एवं सन् 1888 मंे 'महामहोपाध्याय' की उपाधि से विभूषि किया था ।
35. चेतावणीरा चुॅगट्या (केसरीसिंह बाहरठ) मनु प्रकाषनः- इन दोहों के माध्यम से कवि केसरीसिंह बारहठ ने मेवाड के स्वाभिमानी महाराजा फतेहसिंह को 1903 ई, के दिल्ली में जाने से रोका था। ये मेवाड़ के राज्य कवि थे।[4]

दयपुर में अड़ावल संस्थान की ओर से महिलाओं को तलवारबाजी के गुर सिखाए जा रहे हैं. इस प्रशिक्षण के लिए ट्रेनर्स बुलाए गए हैं. ये महिलाएं आनेवाले राजस्थान साहित्य महोत्सव के दौरान घूमर नृत्य के दौरान भी तलवारबाजी का प्रदर्शन करेंगी.

अड़ावल संस्थान के शिवदान सिंह ने बताया कि राजस्थान साहित्य महोत्सव के तत्वावधान में यह कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है. इसमें महिलाओं को निःशुल्क तलवारबाजी सिखाई रही है. इस ट्रेनिंग कार्यक्रम में 8 साल से लेकर 40 वर्ष की महिलाएं हिस्सा ले रही हैं. इन सभी महिलाओं को संस्थान की ओर से तलवार प्रोवाइड करवाई जा रही है. साथ ही प्रशिक्षित ट्रेनर्स इन्हें प्रशिक्षण दे रहे हैं. गुजरात से इन ट्रेनर्स को बुलाया गया है. ये सभी महिलाओं को किस तरीके से तलवार हाथों में पकड़नी है और उनका इस्तेमाल किस तरीके से करना है इस बारे में सिखा रहे हैं. अभी तक कार्यक्रम के दौरान करीब ढाई सौ महिलाओं ने रजिस्ट्रेशन कराया है और ये सभी तलवारबाजी सीख रही हैं. इस कार्यक्रम में महिलाओं को आत्मरक्षा की भी ट्रेनिंग दी जा रही है.

राजस्थान साहित्य महोत्सव में घूमर
कार्यक्रम की आयोजक डॉ सीमा चंपावत ने बताया कि इन महिलाओं को तलवारबाजी के साथ-साथ घूमर नृत्य की भी ट्रेनिंग दी जाएगी. आनेवाले समय में साहित्य महोत्सव में शहर के गणगौर घाट पर तलवारबाजी के साथ घूमर का आयोजन किया जाएगा. करीब 4 दिन पहले ही इस निःशुल्क ट्रेनिंग कैंप की सूचना दी गई थी, जिसके बाद इन सभी महिलाओं ने स्वरुचि से इस कार्यक्रम में भाग लिया. यह ट्रेनिंग प्रोग्राम महिलाओं के लिए निःशुल्क रखा गया है, जिसमें प्रशिक्षित ट्रेनर्स महिलाओं को तलवारबाजी की ट्रेनिंग दे रहे हैं.[November,2022]

विचार-विमर्श

मुस्लिम लेखकों की कृतियाँ

तारीख-ए-फरिश्ता(मुहम्मद कासिम फरिष्ता) तारीख कासिम फारिष्ता-इस ग्रन्थ में महाराण कुंभा, मारवाड़ षासन राजमल की गतिविधियां मेवाड-ईडर संबंधों व अकबर द्वारा अजमेर में करवाये गये निर्माण कार्यो के बारे में जानकारी मिलती है ।
तारीख-ए-षेरषाही- अब्बास खाॅ सरवानी ने इस ग्रन्थ में गिरी सुमेल युद्ध (षेरषाह सूरी एवं जोधपुर के राव मालदेव मध्य) का वर्णन किया है । सरवानी युद्ध केसमय षेरषाह की सेना मंे मौजूद था
तुजुक-ए-बाबरी (बाबर)-प्रथम मुगल बादषाह जहीरूद्दीन मुहम्मद बाबर द्वारा तुर्की भाषा में लिखित आत्महत्या बाबर तैमूर लंग का वंषज था। इस ग्रन्थ से खानवा के युद्ध के बारे में जानकारी मिलती है
आइने अकबरी एवं अकबरनामा (अबुल फजल)- अकबर के नवरत्नों मे से एक अबुल फजल द्वारा अकबर की जीवनी आइनेअकबरी तथा ऐतिहासिक ग्रन्थ अकबरनामा लिखे गये । अकबरनामा में तैमूर से हुमाॅयू तक वंष इतिहास दिया हुआ हे एवं अकबर के काल का विस्तृत वर्णन है । अबुल फजल द्वारा अकबर को लिखे गये पत्रों में संकलन रूक्कत ए अबुल फजल कहलाता है ।
तारीख-उल हिन्द (अलबरूनी)-अलबरूनी द्वारा लिखित इस ग्रन्थ में 1000ई, के आसपास की राजस्थान की सामाजिक आर्थिक स्थिति के बारे मं जानकारी मिलती है ।
तारीख-ए -यामिनी (अलउतबी)-अलउतबी के इस ग्रन्थ में महमूद गजनवी के राजपूतों के साथ हुए संधर्षो की जानकारी प्राप्त होती है ।
तारीख-ए-अलाई खजाईनुल -फतुह- अमीर खुसरो ने इस गन्थ मंे अलाउद्दीन खिलजी एवं मेवाड़ के राणा रतनसिंह के युद्ध (130 ई.) एवं सती प्रथा का वर्णन किया है । खुसरो युद्धों में खिलजी के साथ ही था।

पद्म श्री डा.रानी लक्ष्मीकुमारी चुण्डावत : परिचय

लक्ष्मीकुमारी चुण्डावत का जन्म तत्कालीन उदयपुर राज्य (मेवाड़) के देवगढ ठिकाने में दिनांक २४ जून १९१६ (वि.स.१९७३ आषाढ़ शुक्ल ९) को हुआ था | आपके पिताजी का नाम रावत विजयसिंह जी व दादा का नाम रावत किशनसिंह जी था | आपकी माता रानी नन्दकुंवर मेवाड़ के झाला कुल में देलवाड़ा के राजराणा जालमसिंह जी की पुत्री थी | आपके बड़े भाई रावत संग्रामसिंह जी है थे जो बाद में देवगढ के रावत हुए |
आपने अंग्रेजी शिक्षा देवीचरण सिंह जी से,संस्कृत शिक्षा पंडित पन्नालाल जी से व उर्दू शिक्षा मुंशी जफ़रअली जी से प्राप्त की | बीकानेर के पास रावतसर ठिकाने के रावत तेजसिंह जी के साथ आपका सन १९३४ में पाणिग्रहण हुआ | रावत तेजसिंह जी उदार सात्विक प्रवृति के पुरुष थे | आपके संतानों में दो पुत्र व चार पुत्रियाँ है | बड़े पुत्र घनश्यामसिंह जी वर्तमान में रावतसर के रावत है जो विंग कमांडर के पद से सेवानिवृत हुए है |

दुसरे पुत्र बलभद्रसिंह अमेरिका स्थित भारतीय दूतावास में प्रथम सचिव के रूप में रहे और सन १९९८ में आई.जी.पुलिस रहे व कुछ समय बाद पुलिस महानिदेशक (डी.जी.) के पद से सेवानिवृत हुए | चरों पुत्रियों के नाम श्रीमती सुभद्राकुमारी,रूपमणि,उमाशशि व राज्यश्री है | बड़ी पुत्री सुभद्राकुमारी जी का विवाह अमरकोट (पाकिस्तान) के राणा चन्द्रसिंह जी के साथ सन १९५५ में हुआ था | उनके शेष दामादों में दो कर्नल व एक इंजिनियर है ||[5]

कवियों की कविताओं में रानी सा
चुण्डावत लेखक चतुर,रावतसर रांणिह |
गुणी कुमारी देवगढ ,जग लक्ष्मी जांणिह ||

भावार्थ : श्रीमती लक्ष्मीकुमारी जी चुण्डावत जैसी श्रेष्ठ लेखिका एवं सद्गुण संपन्न महिला को सारा विश्व जानता है,जो देवगढ की कुमारी और रावतसर की रानी के रूप में विख्यात है |
प्रगटी लक्ष्मी पद्मश्री ,गृह चुण्डावत गोत |
रांणी थूं रजथान में, जस अन्जस री जोत ||

लाखीणी शुभ लेखणी , संस्कृति मंडगी साख |
सुता विजय धिन पद्मश्री,लक्ष्मी नै रंग लाख |

भावार्थ : चुण्डावत कुल में प्रकट हुई पद्मश्री लक्ष्मीकुमारी राजस्थान में कीर्ति और गौरव की दीपशिखा है | जिस महान विभूति की लेखनी शुभकारी व श्रेष्ठ है ,राजस्थानी संस्कृति के क्षेत्र में विशेषता की सर्वमान्य साख (प्रतिष्ठा) से जो यशोमंडित है और जो रावत विजयसिंह जी (देवगढ) की सुयोग्य सुपुत्री है,उन स्वनामधन्य श्रीमती लक्ष्मीकुमारी जी चुण्डावत को लाख लाख रंग (धन्यवाद) अर्पित है |

आपके व्यक्तित्व की कुछ विशेष विशिष्टताएँ -
१-राजघराने की पहली महिला जो परदे से बाहर आई |
२-सब से पहले राजनैतिक चुनाव लड़ा |
३- राष्ट्रपति द्वारा पद्म श्री से अलंकृत |
४-राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी की प्रथम महिला अध्यक्ष |
५-राजस्थान विधान सभा में ग्यारह वर्ष समाजनेत्री के रूप में कार्य सञ्चालन |
६-राष्ट्र संघ के नि:शस्त्रीकरण सम्मलेन १९७८(न्यूयार्क) में भारत के प्रतिनिधि के तौर पर भाग लिया |

७-सन १९५८ में हिरोशिमा में हुए विश्व शांति सम्मलेन में विश्वभर से आये प्रतिनिधियों ने श्रद्धांजलि अर्पण करने हेतु केवल आपको ही चुना |
८-शिकागो यूनिवर्सिटी में राजस्थान के वस्त्राभूषण पर व्याख्यान |
९-एफ्रो-एशियन राइटर्स कांफ्रेंस ताशकंद में भारत का प्रतिनिधित्व |
१०- राज्यसभा सदस्य भी रही |
११- राष्ट्रपति डा.राजेन्द्र प्रसाद ने आपके लेखन की सराहना की |
१२-आपकी लिखी कहानी पर एक टेलीफिल्म "पथराई आँखों के सपने " बनी जो १४ मार्च १९९२ को दूरदर्शन पर दिखाई गयी |
१३-आप दूरदर्शन और आकशवाणी की सलाहकार समिति की मनोनीत सदस्या भी रही |
१४-विश्वविद्यालयों में आप राजस्थानी भाषा के विशेषज्ञ के रूप में आपकी मान्यता रही |
१५- राजस्थानी,भाषा,साहित्य एवं संस्कृति अकादमी,बीकानेर का सर्वोच्च सम्मान " महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ पुरस्कार" पाने वाली आप प्रथम महिला साहित्यकार है |

१६-आपके जीवन पर एक फ्रांसिसी महिला टैफट ने के अंग्रेजी में एक पुस्तक लिखी |
१७- आपकी लिखी राजस्थानी कहानियों पर शोध करने वाले डा.भारत ओला को राजस्थान विद्यापीठ,उदयपुर ने पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान की |

आपको मिले पुरस्कार व सम्मान

१९६० मारवाड़ी साहित्य सम्मलेन ,मुंबई द्वारा सम्मानित |
१९६५ सोवियतलैंड नेहरु पुरस्कार,'हिन्दू कुश के उस पार' पर भारत रूस सांस्कृतिक सोसायटी द्वारा प्रदान |
१९७२ विशिष्ठ साहित्य सम्मान,राजस्थान साहित्य अकादमी ,उदयपुर |
१९७६ राजस्थान रत्न ,राजस्थान भाषा प्रचारिणी सभा,अजमेर |
१९७७ दीपचंद पुरस्कार,दिल्ली ,राजस्थानी लोक साहित्य पर उल्लेखनीय लेखन हेतु |
१९७९ सोवियतलैंड नेहरु पुरस्कार, रूस की सरकार द्वारा रुसी कहानियों के राजस्थानी अनुवाद " गजबण " हेतु प्रदान किया |

१९७९ जवाहरचंद मेघानी स्वर्ण पदक, लोक संस्कृति शोध संस्थान, अहमदाबाद |
१९८२ महाराणा कुम्भा पुरस्कार , महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन , उदयपुर |
१९८२ उत्कृष्ट साहित्य सर्जन के लिए विद्या प्रचारिणी सभा,उदयपुर द्वारा पुरस्कृत |

१९८४ पद्मश्री सम्मान, भारत सरकार द्वारा राजस्थानी साहित्य और लोक-साहित्य में उल्लेखनीय योगदान हेतु |
१९८५ राजपूत महासभा ,जयपुर द्वारा राजस्थानी साहित्य और लोक साहित्य में उल्लेखनीय योगदान हेतु पुरस्कृत |
१९८८ राजस्थानी भाषा साहित्य और संस्कृति अकादमी,बीकानेर द्वारा डा.एल.पी.टेस्सीटोरी (एक इटालियन विद्वान जो बीकानेर रहा) के जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर सम्मानित |
१९८८ साहित्य महामहोपाध्याय ,साहित्य सम्मलेन,प्रयाग |[6]
१९९३ नाहर पुरस्कार ,मुंबई |
१९९३ लखोटिया पुरस्कार ,दिल्ली |

१९९६ वाग्मणि पुरस्कार ,राजस्थान लेखिका साहित्य सोसायटी ,जयपुर |
१९९७ राजस्थान सरकार द्वारा " सांस्कृतिक राजस्थान" हेतु पुरस्कृत |
१९९७ राजस्थान प्रतिभा पुरस्कार, राजस्थान दिवस समारोह समिति ,जयपुर |

१९९८ डा.वैश स्मृति पुरस्कार |
१९९८ वरिष्ठ साहित्य सम्मान , राजस्थान साहित्य अकादमी ,उदयपुर |
२००२ सरस्वती सम्मान , एन एम् के आर वी कालेज ,बैंगलोर |
२००३ महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ पुरस्कार ,राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी ,बीकानेर |
२००३ महाराजा सवाई प्रतापसिंह पुरस्कार,महाराजा सवाई मानसिंह पैलेस संग्रहालय ,जयपुर |
२००५ मातुश्री कमला गोयनका पुरस्कार, कमला गोयनका फाउंडेशन ,बैंग्लोर |

आपकी प्रकाशित पुस्तकें

प्रकाशन वर्ष शीर्षक विधा तथा भाषा
1984 अन्तरध्वनि गद्य गीत, हिन्दी
1956 राजस्थान का हृदय राजस्थानी काव्य का हिन्दी अनुवाद
1957 हुंकारों दो सा बालकथाऐं, राजथानी
1958 जुगल विलास राजस्थानी काव्य
1958 कविन्द्र कल्प लतिका राजस्थानी काव्य
1959 मूमल राजस्थानी कहानियाँ
1959 हिन्दुकुश के उस पार यात्रा विवरण , हिन्दी
1960 गिर ऊँचा ऊँचा गढा राजस्थानी कहानियाँ
1960 कै रै चकवा बात राजस्थानी कहानियाँ
1960 राजस्थानी दोह संग्रह राजस्थानी काव्य का हिन्दी अनुवाद
1960 वीरवाण बहादर ढाढ़ी रै बणायो राजस्थानी काव्य (डिंगल)
1960 अमोलक बांता राजस्थानी कहानियाँ
1961 रवि ठाकर री बांता राजस्थानी अनुवाद
1961 राजस्थानी लोकगीत हिन्दी अनुवाद सहित
1961 टाबरां री बांता बालकथाऐं, राजस्थानी
1961 राजस्थानी के प्रसिद्ध दोहे सोरठे राजथानी दोहों-सोरठों का हिन्दी अनुवाद
1962 गाँधी जी री बांता बाल-साहित्य , राजस्थानी
1964 ग्रन्थमाल राजस्थानी तथा हिन्दी साहित्य का कैटलोग
1966 डूंगजी जवारजी राजथानी कहानियाँ
1966 राजस्थानी लोक गाथा राजस्थानी लोकगाथाओं का हिन्दी अनुवाद
1966 बाघो भारमली राजस्थानी कहानी
1966 संसार री नाम कहानियाँ राजस्थानी अनुवाद
1966 सूली रा सूय माथै चैक लेखक जूलियस फ्युचिक के संस्मरणों का राजस्थानी अनुवाद

1969 शान्ति के लिए संघर्ष यात्रा-विवरण , हिन्दी
1970 लेनिन री जीवनी राजस्थानी अनुवाद
1977 बगडावत देवनारायण महागाथा राजस्थानी
1978 गजबण रूसी कहानियों का राजस्थानी अनुवाद
1981 बात-करामात बाल साहित्य, राजस्थानी
1985 रजवाडी लोकगीत हिन्दी अनुवाद
1985 राजस्थान के सांस्कृतिक लोकगीत हिन्दी अनुवाद
1989 राजस्थनी की रंगभीनी कहानियाँ हिन्दी अनुवाद
1990 मूमल का अंग्रेजी अनुवाद (जी. एल. माथुर) अंग्रेजी
1992 राजस्थान की लोककथाएं (जी. एल. माथुर) कै रै चकवा बात का अंग्रेजी अनुवाद

1994 सांस्कृतिक राजस्थान हिन्दी
1994 रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत ग्रंथावली (जहूरखां मेहर द्वारा संपादित) राजस्थानी

1996 राजस्थनी प्रेम गाथाएं हिन्दी
1996 राजस्थनी दोहा संग्रह हिन्दी अनुवाद
2000 फ्राम पर्दा टू द पीपल (फ्रांसेस टैफ्ट) जीवनी , अंग्रेजी
2002 रजवाड़ो के रीति रिवाज़ हिन्दी

लक्ष्मीकुमारी द्वारा लिखित कहानियों की भाषा इतनी सरल है और कहानियां इतनी बढ़िया है कि उन्हें पढ़ते पढ़ते मन ही नहीं भरता| राजस्थानी भाषा में लिखी कहानियां पढने का तो मजा ही अलग है| [7]

परिणाम

प्रथम पोकरमल राजरानी गोयल स्मृति राजस्थानी कथा साहित्य पुरस्कार उदयपुर की राजस्थानी साहित्यकार रीना मेनारिया को बीकानेर, (ओम एक्सप्रेस)मुक्ति संस्था, बीकानेर के तत्वावधान में प्रथम पोकरमल राजरानी गोयल स्मृति राजस्थानी कथा साहित्य पुरस्कार उदयपुर निवासी राजस्थानी साहित्यकार रीना मेनारिया को रविवार को स्थानीय होटल राजमहल के सभागार में अर्पित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार डॉ मदन केवलिया थें , कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त संभागीय आयुक्त ए एच गौरी एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता शिक्षाविद् और गृह विज्ञान विशेषज्ञ डॉ विमला डू ॅकवाल थी।

कार्यक्रम के प्रारंभ में कार्यक्रम समन्वयक डॉ नरेश गोयल ने स्वागत भाषण करते हुए कहा कि समाज के लोगों का यह दायित्व है कि अपने समय के कलाकारों, साहित्यकारों एवं संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले महानुभावों का सम्मान करें, डॉ गोयल ने आगंतुकों का स्वागत किया ।

वरिष्ठ साहित्यकार एवं मुक्ति संस्था के सचिव कवि – कथाकार राजेन्द्र जोशी ने कहा कि गत वर्ष देश भर के राजस्थानी कथाकारों से पुरस्कार के लिए राजस्थानी भाषा में पुस्तकें आमंत्रित की गई थी जिसके तहत सोलह पुस्तकें प्राप्त हुई जो कि सभी अन्य भारतीय भाषाओं की कथा विधा के समकक्ष शिल्प एवं कथानक की दृष्टि में उम्दा थी उन्हीं में से नटणी री नौपत राजस्थानी उपन्यास का चयन किया गया, इस उपन्यास में एक कलाकार की कला और उसके जीवन की दास्तान कहती है, राजस्थानी के इस पुरस्कृत उपन्यास के माध्यम से सामाजिक ताने-बाने के साथ प्राचीन उम्दा समृद्ध परम्परा को ताजा करता है । जोशी ने बताया कि नटणी री नौपत राजस्थानी उपन्यास कलाकारों के जीवन संघर्षों की परतें खोलता है । जोशी ने कहा कि जब नई शिक्षा नीति में प्रादेशिक भाषाओं की बात को प्राथमिकता दी जाती तो भारत सरकार को संविधान की आठवीं अनुसूची में राजस्थानी भाषा को शामिल करना चाहिए, उन्होंने कहा कि इसके लिए राजस्थानी भाषा सभी पैमाने पर खरी उतरती है ।

विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त संभागीय आयुक्त ए.एच.गौरी ने कहा कि राजस्थानी भाषा प्रेम एवं अपनत्व की भाषा है । उन्होंने कहा कि समाज का यह उत्तरदायित्व है कि रचनाकारों, कलाकारों एवं संस्कृति के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को सम्मान दे। गौरी ने कहा कि राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शीघ्र ही शामिल किया जाना चाहिए ।[2,3]

डा ॅ. केवलिया ने कहा कि राजस्थानी भाषा प्रेम एवं अपनत्व की भाषा है, यह समाज में अपना विशिष्ट स्थान रखती है, राजस्थानी भाषा में बेहतरीन साहित्य लिखा जा रहा है जिसका उदाहरण नटणी री नौपत राजस्थानी उपन्यास है, केवलिया ने कहा कि राजस्थानी भाषा में नगद पुरस्कार की शुरुआत बीकानेर में होना इस बात को प्रमाणित करता है कि यह जन-जन की भाषा है ।
डा ॅ विमला डूकवाल ने कहा कि महिला लेखन में भी राजस्थानी महिला साहित्यकार दूसरी भाषाओं के लेखकों से किसी भी स्तर पर कम नहीं है, उन्होंने कहा कि सामाजिक सरोकारों के विषयों पर महिला लेखन में राजस्थानी लेखिकाओं का बड़ा नाम है उसमें युवा लेखिका रीना मेनारिया को शामिल किया जा सकता है । डूकवाल ने मुक्ति संस्था का साधुवाद करते हुए कहा कि राजस्थानी साहित्य में पुरस्कार की परम्परा को कायम रखते हुए और विस्तार देना चाहिए ।

कार्यक्रम में अतिथियों ने रीना मेनारिया को ग्यारह हजार रुपये का नगद चेक, स्मृति चिन्ह , अभिनंदन पत्र ,शाल एवं श्री फल भेंट किया ।
पुरस्कृत-सम्मानित रीना मेनारिया ने अपनी रचना प्रक्रिया साँझा करते हुए मुक्ति संस्था एवं गोयल परिवार का आभार प्रकट किया । पुरस्कार समारोह में साहित्यकार राजाराम स्वर्णकार ने पुरुस्कृत साहित्यकार रीना मेनारिया का परिचय देते हुए उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला । निर्णायक मंडल के संयोजक मधु आचार्य ने निर्णय प्रक्रिया को सबके साथ साझा की।

कार्यक्रम का संचालन कवयित्री-आलोचक डॉ रेणुका व्यास ने किया । अंत में मुक्ति संस्था के अध्यक्ष एडवोकेट हीरालाल हर्ष ने आभार प्रकट किया । इस अवसर पर जयचंद लाल सुखानी, एडवोकेट महेन्द्र जैन एवं पूर्ण चंद राखेचा ने भी सम्बोधित किया ।[5,7]
कार्यक्रम में शरद केवलिया,महेन्द्र कुमार मेनारिया, कमल रंगा, एडवोकेट महेन्द्र जैन, डॉ नीरज दइया, चन्द्रशेखर जोशी, सरोज भाटी, नवनीत पाण्डे, जगदीश रतनू, अशफाक कादरी, नदीम अहमद नदीम, इसरार अहसन कादरी, अरविंद ऊभा,डॉ फारूक़ चौहान, जुगल पुरोहित, हजारी देवड़ा, डॉ गौरीशंकर प्रजापत, हेम शर्मा, मानमल सेठिया, पूर्ण चंद राखेचा, संजय पुरोहित, प्रोफ़ेसर

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

पी .आर.भाटी, ओमप्रकाश मुधंडा , राजेश गोयल, माँगी लाल भद्रवाल, विष्णु शर्मा, हनुमान कच्चवा, कल्याण मल सुथार, सहित अनेक महानुभावों ने शिरकत की ।[February,13-2022]

निष्कर्ष

बोलते हिंदी में हैं और मान्यता राजस्थानी की चाहते हैं
प्रथम पोकरमल राजरानी गोयल स्मृति पुरस्कार विजेता कथाकार रीना मेनारिया को बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं कि उन्होंने पुरस्कार ग्रहण करने के बाद अपनी बात राजस्थानी में रखी। मुझे बहुत अच्छा लगा कि उन्होंने अपने अंतर्मन को खोला और अपना लेखकीय संघर्ष अवधारणाएं बेबाकी से प्रस्तुत करते हुए भाषा की क्षेत्रीयता से ऊपर उठ कर मानकीकरण की बात भी रखी। साथ ही आज मुझे बेहद आश्चर्य हुआ कि बाकी सारे वक्ताओं को पता नहीं क्यों हिंदी में बोलना उचित लगा। आदरणीय डॉ. मदन केवलिया ने मातृभाषा की बात की.. पंजाबी राजस्थानी का जोरदार तड़का लगाया। यहां स्मरण करना चाहता हूँ कि आदरणीय डॉ. अर्जुनदेव चारण का उदाहरण हमारे सामने है, वे राजस्थान में और जहां राजस्थानी जानने वाले हो वहां राजस्थानी में ही बोलते बतियाते हैं। [7]

यहां यह पोस्ट लिखना एक प्रकार का अनुरोध करना है कि राजस्थानी के कार्यक्रम में मंच के सभी गणमान्य अतिथियों, वक्ताओं और संयोजक को राजस्थानी भाषा में बोलना चाहिए। पहले हम खुद राजस्थानी को मान्यता दें फिर मान्यता की बात करें। [13-February-2022]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. Mayaram, Shail (2006). Against History, Against State (अंग्रेज़ी में). Permanent Black. पृ° 43. आईऍसबीऍन° 978-81-7824-152-4. The lok gathā (literally, folk narrative) was a highly developed tradition in the Indian subcontinent, especially after the twelfth century, and was simultaneous with the growth of apabhransa, the literary languages of India that derived from Sanskrit and the Prakrits. This developed into the desa bhāṣā, or popular languages, such as Old Western Rajasthani (OWR) or Marubhasa, Bengali, Gujarati, and so on. The traditional language of Rajasthani bards is Dingal (from ding, or arrogance), a literary and archaic form of old Marwari. It was replaced by the more popular Rajasthani (which Grierson calls old Gujarati) that detached itself from western apabhransa about the thirteenth century. This language was the first of all the bhasas of northern India to possess a literature. The Dingal of the Rajasthani bards is the literary form of that language and the ancestor of the contemporary Marvari and Gujarati.
2. ↑ South Asian arts. (2008). In Encyclopædia Britannica. अभिगमन तिथि: २९ जून २०१३, from Encyclopædia Britannica Online: http://www.britannica.com/eb/article-65211 Archived 2007-11-13 at the Wayback Machine
3. ↑ Paniker, K. Ayyappa (1997). Medieval Indian Literature: Surveys and selections (Assamese-Dogri) (अंग्रेज़ी में). Sahitya Akademi. आईऍसबीऍन° 978-81-260-0365-5. The writers in the Charan style did not write in one rasa only but showed the miracle of their genius by writing at the same time in all, i.e. the vir kavya, shringar kavya and bhakti kavya.
4. ↑ Datta, Amaresh (1987). Encyclopaedia of Indian Literature: A-Devo (अंग्रेज़ी में). Sahitya Akademi. आईऍसबीऍन° 978-81-260-1803-1. The literature of the Charanas mainly consists of Dingala Gitas, Duhas and other metrical writings. They have been well versed historians as well. Suryamall, Bamkidasa, Dayaladasa and Syamaladasa are the giants in the field. As poets they mainly composed heroic poems, and secondly those of devotion to gods, and rarely of erotic nature and other kinds. This literature has proved very inspiring to the Rajaputs who fought until death for the honour of their land, religion, women-folk and the oppressed ones. They were honoured by the ruling chiefs by the gift of fiefs, valuable presents and above all by a show of personal respect which heightened their position in the society.
5. ↑ Meghani Zaverchand Kalidas (1943). Charano Ane Charani Sahitya.
6. ↑ Gujarāta kā madhyakālīna Hindī sāhitya. Hindī Sāhitya Akādamī. 1997. आईऍसबीऍन° 978-81-85469-98-0.
7. ↑ Maru-Bhāratī. Biṛlā Ejyūkeśana Ṭrasṭa. 1972.

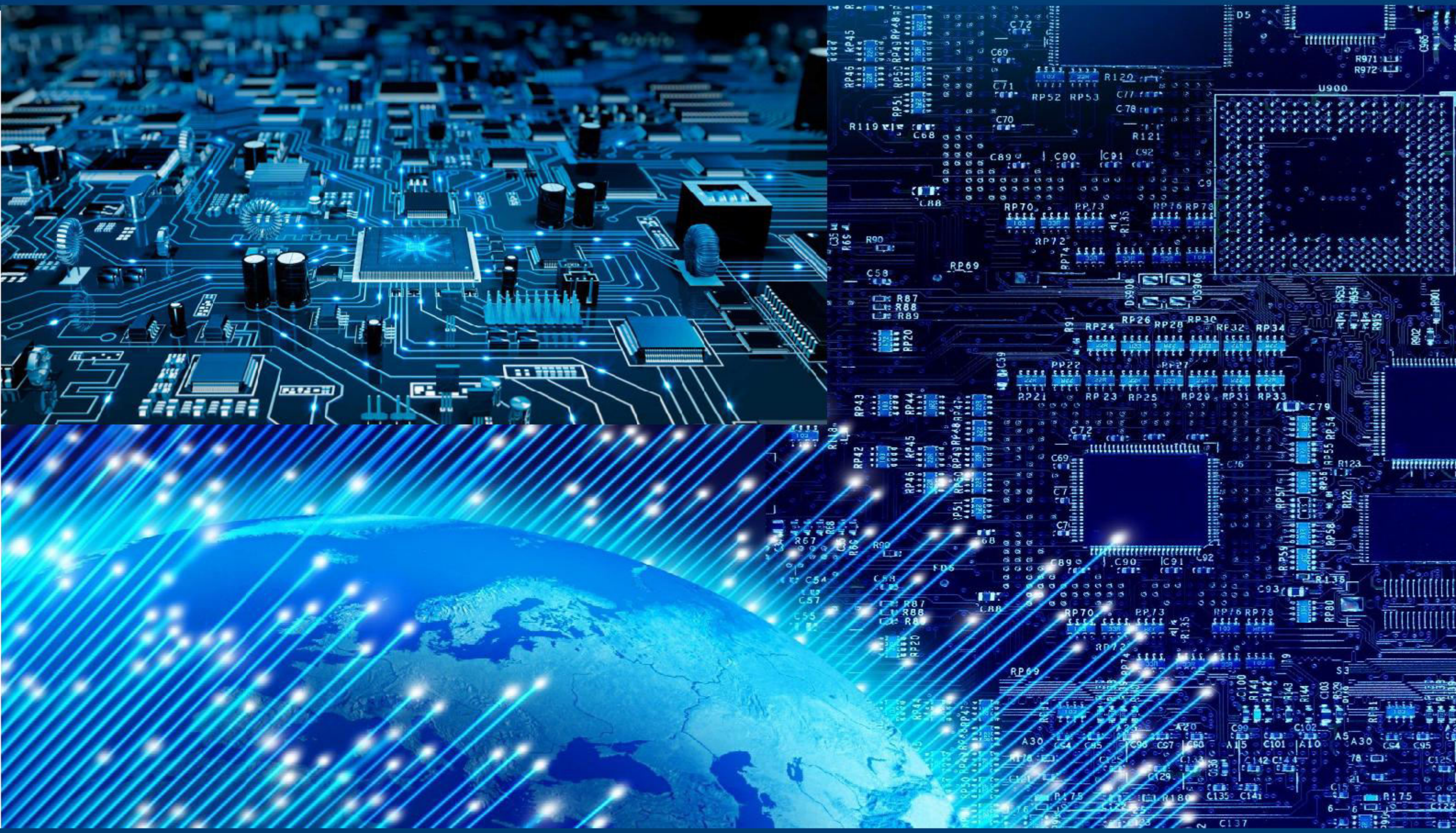

IJARASEM

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com